शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रेमचंद के साहित्य में ग्रामीण जीवन
('गोदान' के संदर्भ में)

डॉ. सीमा हिन्डोलिया
तुलनात्मक भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर,. मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

प्रेमचंद हिन्दी और उर्दू के श्रेष्ठ भारतीय लेखकों में से एक हैं। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरदचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें उपन्यास सम्राट कहकर सम्बोधित किया था। प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास की एक ऐसी परम्परा का विकास किया जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। आगामी एक पूरी पीढ़ी को गहराई तक प्रभावित कर प्रेमचंद्र ने साहित्य की यथार्थवादी परम्परा की नींव रखी। उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। प्रेमचंद उपन्यास साहित्य में दो स्पष्ट मोड़ों की पहचान की जा सकती है - सामाजिक यथार्यवाद एवं सामाजिक आदर्शवाद। प्रेमचंद जी ने अपने आरंभिक उपन्यासों में सामाजिक समस्या को सुलझाने का प्रयास किया है। इनका आदर्शवाद, अक्षमवादी, सदनवादी तथा हृदय परिवर्तन जैसे समाधानों की पड़ताल है। परंतु अपने आखिरी पड़ाव में प्रेमचंद के उपन्यास लेखन की परंपरा पूरी तरह बदल गई। आदर्शात्मक समाधान की जगह उन्होंने सामाजिक समस्याओं का हू ब हू चित्रण किया। गोदान से सामाजिक यथार्थवाद की धारा प्रस्फूटित हुई। किसानों मजदूरों की त्रासदी, औपनिवेशिक महाजनी शोषण, अपालकर, कृषि, ग्रामीण सामाजिक ताने-बाने को इस उपन्यास में प्रेमचंद जी ने बिना किसी लाग-लपेट के उभारने का प्रयास किया है।

प्रस्तावना

प्रेमचंद्र मुंशी जी का जन्म 31 जुलाई 1880 को हुआ। इस बालक को पिता ने धनपतराय के नाम से पुकारा, ताऊ ने नवाबराय की उपाधि दी, मित्र मण्डली ने 'बेवकूफ' कहा तथा समाज तथा राष्ट्र की सेवा भावना ने प्रेमचंद्र बना दिया। 1908 ई. में प्रकाशित 'सोजे वतन' इसीलिये जब्त (1910 ई.) कर लिया गया, किंतु प्रेमचंद का छटपटाता लेखक हृदय कैसे मानता। कानपुर से प्रकाशित होने वाले 'आजाद' पत्र में लिखना प्रारंभ किया। 'जलवा-ए-ईसार' के प्रकाशन (1912 ई.) के साथ ही यह मान लिया गया कि - "एक दिन यह उम्दा नावलिस्ट होंगे।" इसके पश्चात् वास्तव में उनकी प्रतिभा प्रकट होने लगी। 'सरस्वती' में लिखना प्रारंभ (1915 ई.) करने के साथ ही उनके 'सप्त सरोज' 'नवनिधि' कहानी संग्रह प्रकाशित हुए (1917 ई.) हिन्दी वालों को 'बाजारे हुस्न' (1918 ई.) में तथा (1920 ई.) में 'जलवा-ए-इसार' 'सेवा सदन' तथा 'वरदान' के नामांतरण के साथ पढ़ने को मिले। समाज की समस्त परिस्थितियों को समन्वित करके 1922 में वे 'प्रेमाश्रम' लेकर हिन्दी साहित्य के मंच पर अवतरित हुए। जीवन के इन विभिन्न अनुभवों में सुख खोकर वे अपने को पाते रहे "उनका सारा

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जीवन कठिनाइयों के साथ सतत् संघर्ष का एक प्रयत्न रहा है और उनके उपन्यास उन्हीं प्रयत्नों के इतिहास है" होरी के जीवन के कुछ अंश तो प्रेमचंद की जीवन-यात्रा के सच्चे चित्र कहे जाते हैं। 1923 ई. में प्रेमचंद ने सरस्वती प्रेस की स्थापना की।

1924 से 1930 ई. के मध्य उनके 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला' तथा 'प्रतिज्ञा' उपन्यास तथा कई कहानियाँ तथा नाटक संग्रह प्रकाशित हुए। 1930 ई. में 'हंस' प्रारंभ किया। इसी मध्य उनके दो उपन्यास 'गबन' (1931 ई.) तथा 'कर्मभूमि' (1932 ई.) का प्रकाशन हुआ। 1935 ई. में वे बम्बई से काशी लौटे। इसी बीच अपने जीवन की सबसे बड़ी कृति 'गोदान' लिखते रहे, जिसे उन्होंने अपनी समस्त साधना, आस्था, एवं निष्ठा का सत्व देकर भारतीय खेतिहारों के जीवन का महाकाव्य बना डाला। हरिकृष्ण प्रेमी लिखते हैं - "हिन्दी भाषा शायद कभी मुंशीजी से श्रेष्ठ कथाकार और उपन्यासकार पैदा कर सके, लेकिन उनसे श्रेष्ठ मनुष्य साहित्यकारों में पैदा होगा इसमें मुझे संदेह है।"

गोदान में ग्रामीण जीवन

साहित्यकार का साहित्य समाज का ही नहीं अपितु स्वयं उसके व्यक्तिगत जीवन का भी दर्पण होता है, प्रेमचंद ने अपने जीवन में ही साहित्य ढूंढ लिया है। गोदान भारतीय ग्रामीण जनता का सच्चा व युग नियात्मक दस्तावेज है। यह अवध प्रांत में दो गाँव सेमरी व बेलरी तथा शहर के रूप में लखनऊ को केन्द्र में रखकर प्रेमचंद जी ने औपनिवेशिक भारत के उत्तर व ग्रामीण क्षेत्रों की एक प्रतिनिधि कथा तैयार की है। इस उपन्यास का केन्द्रीय चरित्र 'होरी' है उन तमाम सीमान्त किसानों का प्रतिनिधि है, जिसमें परस्पर मर्यादा के प्रति रागबोध है। 'गोदान' यहाँ की अस्सी प्रतिशत जनता जो गाँवों में रहती है के सुख-दुख की जीवन गाथा है। गाँव की कहानी किसान से भिन्न नहीं हो सकती, इसलिए गोदान की अधिकाधिक कथा की शुरूआत 'होरी' की दिनचर्या से होती है। धीरे-धीरे होरी ग्रामीण जीवन के संकट में धंसता चला जाता है। और अंत में मौत ही उसे संकट से मुक्त कर पाती है। 'गोदान' उपन्यास के होरी की मृत्यु व धनिया पहाड़ खाकर गिरने से होरी है। 'गोदान' का प्रारंभ व अंत ग्राम कथा के नायक से जुड़ी घटनाओं से होता है। होरी व धनिया के दुःख-दर्द से भरा हुआ है। अतः गोदान भारतीय ग्राम संस्कृति में विकसित होते हुए होरी, धनिया व उसकी तरह के किसानों की करूण कथा है।

प्रेमचंद जी ने अपने दृष्टिकोण को उद्घाटित करते हुए कहा कि "मैं साहित्य को मनोरंजन की वस्तु नहीं मानता।" साहित्यकार का काम केवल मनोरंजन करना नहीं है बल्कि वह काम तो चारण भाट मसखरों का है। 'गोदान' कुछ ऐसी त्रासदी को उद्घाटित करने वाला उपन्यास है जिसमें एक तरफ सामन्तवाद के पूंजीवादी रूपान्तरण की झलक मिलती है तो साथ ही किसान के विवश होकर मजदूर में रूपान्तरण की गाथा भी। उनका यथार्थवाद भारतीय किसान की जीवन दृष्टि का अर्जित यथार्थवाद है। भारतीय किसान बहुत यथार्थवादी व व्यवहारिक होता है वह मिट्टी से जुड़ा हुआ होता है। थोड़ा झूठ बोल लेने व चालाकी कर लेने को वह पाप नहीं समझता।

"बेगार सफाई करने लगते तथा मुख्तार साहब दावत का प्रबंध करते। दीन किसान बिना दासों के गुलाम बन जाते।" होरी जैसे सीमान्त किसान महाजनी सामन्ती शोषण की भट्टी में पलते बढ़ते दिखे। ऐसे सीमान्त किसानों की त्रासदी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्वभाविक थी जो एक तरफ अलाभकर कृषि की मार झेल रहे थे। दूसरी तरफ सरकारी रियासत का अभाव था और ऊपर से जिन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए महाजनी चंगुल का शिकार होना पड़ता था। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास में ''नायक होरी ने केवल लोकलाज हेतु सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उस बेचारे को सदैव यही भय रहता था कि कहीं लोग उसकी ओर उंगली तो नहीं उठा रहे। ऐसा सोचना उसके लिए स्वाभाविक था। वह उक्त भारतीय ग्रामवासी यह सत्य है कि भारतीय ग्रामीण कभी भी जनमत के विरूद्ध न जायेगा, जो पंच कह देंगे वही ठीक है पंच ही परमेश्वर है।" पंचों में परमेश्वर के पास की मान्यता गोदान में धूमिल दिखाई पड़ी। गोबर की इतनी सी भूल थी कि उससे अंतरजातीय विधवा झुनिया का हाथ थामा, पंचायत व बिरादरी के रूप में दी गई। होरी यदि कृषि की मरजादा से जुड़ा है तो पंचायत व बिरादरी के मोह को भी नहीं त्यागा पाता है। गांधी जी के अनुसार - "मैंने अज्ञान या पक्षपात वाली पंचायतों द्वारा दिये गये कुछ बेतुके और ऊटपटांग फैसलों के बारे में सुना। अगर साथ हो तो बुरा है ऐसी अनियमित और नियम विरूद्ध काम करने वाली पंचायतें अपने ही बोझ से दबकर खत्म हो जायेंगी।" धनिया का कथन - "ये हत्यारे गाँव के पंच नहीं राक्षस है जो हमारा सर्वस्व हड़पकर काल मारना चाहते हैं डांड तो बहाना है।"

"ढोलारी के ग्रामीण धर्म अंध भक्त है भले ही धर्म के कारण उन्हें कठिनाइयों का सामना ही क्यों न करना पड़े। इसी मनोवृति का अनुचित लाभ उठाकर ब्राह्मण दातादीन, किसानों से दुगना-चौगुना ब्याज वसूल करता है किन्तु होरी के समान किसान इसे अनुचित नहीं मानते तथा ब्राह्मण के रुपये संघर्ष देते हैं''। "कोई भी बिरादरी चाहे वह उच्च हो या नीच नक्कू बनकर नहीं रहना चाहती। हरकू चमार की लड़की, सिलिया से जब मातादीन ब्राह्मण या अवैधानिक यौन संबंध हो जाता है तो एक दिन उसकी बिरादरी भावना उसे क्रांति करने के लिए प्रेरित करती है।"

गोदान एक उपन्यास है परन्तु अपनी बनावट को लेकर महाकाव्यात्मक गरिमा से युक्त है। महाकाव्य सामन्ती समाज की विधा है जबकि उपन्यास का जन्म मरते हुए सामन्तवाद के गर्भ से हुआ। उपन्यास पूंजीवादी समाज में विकसित विधा का नाम है। महाकाव्य जहां पद्यात्मक शैली की विधा है वहीं उपन्यास गद्यात्मक शैली की विधा है।

गोदान के अनुसार त्रासदी का नायक सामाजिक परिस्थितियों तथा क्रूर विचारों से जीवन पर्यन्त टकराता है। वह अपनी किसी रणनीतिक भूल व महत्वकांक्षा का शिकार होकर या तो आत्महत्या कर लेता है या तो उसकी हत्या कर दी जाती है। गोदान कथा शहरी व कथा के रूप में भारतीय जीवन धारा को पकड़ने की कोशिश करती है। इसकी मुख्य कथा ग्रामीण कथा तथा कृषकों के जीवन से है। प्रेमचंद्र जी औपनिवेशिक भारत के किसानों की त्रासदपूर्ण परिस्थितियों का उद्घाटित करने की कोशित की है - "इन महाजनों के त्रस्त ग्रामीण विचार करता है कि- "न जाने इन महाजनों से भी कभी गला छूटेगा कि नहीं" और स्वयं ही उत्तर देता है था कि "इस जन्म में तो कोई आशा नहीं है।" बचपन से ही महाजनों ने होरी को कर्ज व सूद की ढरकी पिलाकर पाला। उसकी त्रासदी का कारण कुछ ऐसा ही रहा है।

गोदान की केन्द्रीय समस्या ऋण की ही समस्या है। उपन्यासकार ने इसे उद्घाटित करते हुए

लिखा कि "जमींदार तो एक था लेकिन महाजन तीन थे। यदि उपन्यास के आकड़े का प्रयोग किया जाए तो होरी ने दुलारी सहुआइन से तीस रूपये मगरूशाह से पचास रूपये तथा दातादीन से तीन रूपये लिये। यह राशि 5-10 वर्षो के अंतराल में दो सौ से तीन सौ रूपये में तब्दील हो गई। शोषक ने अपने जमींदार तथा महाजनी चंगुल से जिस प्रकार कृषकों का शोषण किया उसने यह कहा जा सकता है कि यह समस्या छोटी ही नहीं थी बल्कि उससे सीमान्त सभी किसानों की थी।

गोदान कृषकों की अंधविश्वासी प्रवृतियों को भी उपरोक्त तरीके से आधारित करता है। प्रेमचंद ने कृषकों की अशिक्षा तथा अदूरदर्शिता पर व्यापक चर्चा नहीं की लेकिन त्रासदी के मूल में अशिक्षा का विशेष योग रहा है। महाजनों से कर्ज लेना अथवा लगान भरत समय किसान पुरजी रसीद की मांग नहीं करते इसका खामियाजा उन्हें भरना पड़ता है।"

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि प्रेमचंद ने साहित्य के माध्यम से ग्रामीण सामाजिक ढांचे पर आधारित भारतीय सामाजिक व्यवस्था तथा समस्याओं का साहित्य दृष्टिकोण से अध्ययन किया है। प्रेमचंद जी ने कृषक जीवन के सभी पहलुओं को पकड़ने की कोशिश की है। होरी जैसा किसान यदि त्रासपूर्ण जीवन जीने को अभिशप्त है तो उसका एक मात्र कारण शोषण नहीं था बल्कि ग्रामीण जीवन की आस्था, धार्मिक व जजमानी व्यवस्था, पंचायत बिरादरी के प्रति मोह सामाजिक अनुष्ठान तथा विलासप्रियता जैसे कारण भी प्रभावकारी थे। गोदान में जातिभेद, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, जमींदार-रैयत एवं महाजन-देनदार की भेदमूलक संस्कृति पूरे तामझाम के साथ मौजूद है। होरी गोदाम में गाँव की संरचना, पारों के नामकरण, वेशभूषा आर्थिक सामाजिक स्थिति तथा भाषा से स्वतंत्रता पूर्व में ग्राम जीवन के बडे ही व्यंजक चित्र देखने को मिलते हैं। ग्रामीण संस्कृति में परम्परागत मूल्यों, पहनावे, अंधविश्वास खेल एवं पशुधन का काफी महत्व है।

संदर्भ ग्रंथ

1.मदन गोपाल कलम का मजदूर' 'प्रेमचंद्र' पृष्ठ 69
2.शिवनारायण श्रीवास्तव - हिन्दी उपन्यास पृष्ठ 96
3.प्रो. रामबिहारी सिंह तोमर - ग्रामीण समाजशास्त्र पृष्ठ 99
4.उपदेश: मान सरोवर - भाग 8 पृष्ठ 183-84
5.आर.एन. मुफर्जी तथा जी.सी. कुलश्रेष्ठ: भारतीय ग्रामीण समाज शास्त्र: पृष्ठ 61
6.गाँधी जी - 'ग्राम स्वराज्य' पृष्ठ 67-68
7.प्रेमचंद - गोदान पृष्ठ 223
8.प्रेमचंद - गोदान पृष्ठ 108
9.प्रेमचंद - गोदान पृष्ठ 184
10.प्रेमचंद - गोदान पृष्ठ 185
11.प्रो. रामबिहारी तोमर - ग्रामीण समाजशास्त्र पृष्ठ 438
12.रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 15